स्वतन्त्रता एवं खेती–बाड़ी के विकास में गाँधीजी का योगदान

डॉ0 उत्तरा यादव,
एसोसिएट प्रोफेसर, समाजशास्त्र विभाग,
महिला विद्यालय डिग्री कॉलेज, लखनऊ

इस महान भारतीय धरती पर 2 अक्टूबर के दिन एक महामानव रूप में एक महान विभूती का जन्म एवं अवतार हुआ जिनके ऊपर समस्त मानवता एवं मानव जाति को गर्व है। इस महामानव का प्रादुर्भाव मोहनदास करमचन्द गाँधीजी के रूप में पोरबन्दर काठियाबाड गुजरात में 2 अक्टूबर सन् 1969 ई0 को हुआ। प्रत्येक वर्ष 2 अक्टूबर को भारतवर्ष में ही नहीं पूरी दुनिया में 'अहिंसा दिवस' के रूप में मनाया जाता है एवं उनके कृतित्व एवं व्यक्तित्व के लिए श्रद्धांजलि एवं आभार व्यक्त किया जाता है।

गॉधी जी 30 जनवरी 1948 को एक उग्र व्यक्ति श्री नाथूराम गोडसे की गोलियों के शिकार हो गए। गॉधीजी का अन्तिम वाक्य 'हे राम' था। महात्मा गॉधी को उनकी विश्वव्यापी लोकप्रियता के लिए ''राष्ट्रपिता एवं महात्मा गॉधी'' के नाम से जाना जाता है।

1. सादाजीवन उच्च विचार **Simple Living High Thinking**– गाँधीजी का जीवन सादगी एवं उच्च विचारों का जीवन्त उदाहरण था। उनका बचपन से मृत्युपर्यन्त जीवन सभी के लिए अनुकरणीय है। उन का सादगी भरा जीवन एवं उच्च विचारों के माध्यम से ही 'राष्ट्रपिता' बने। इन महापुरुष का पूरी तरह साधारण हो जाना ही असाधारण उपलब्धि है। उन्होंने अपना पूरा जीवन गरीबों एवं दरिद्रनारायन की सेवा में लगाया।

2. जो किया मात्र वही कहा **(What he said he did?)** – गाँधीजी जी ने 'वही कहा जो जीवनपर्यन्त किया।' ऐसी कोई बात नहीं कहीं जो उन्होंने अपने जीवन में न किया हो। उन्होंने इस कहावत ''जो गुन सिखावै करके दिखावै'' को अपने जीवन में चरितार्थ करके दूसरों के लिए उदाहरण प्रस्तुत किया। इनका सारा जीवन ही सत्य की प्रयोगशाला थी जो जनमानस पटल पर स्वतः अंकित हो जाता है। दोनों अपने तथा अपने पारिवारिक जीवन पर प्रयोग करने के बाद ही जनता से करने को कहा। गाँधीजी ने सजीव खेती कृषि एवं पशुपालन पद्धति तथा कृषि ऋषि परम्परा को आजीवन प्रोत्साहित किया।

3. जय जवान, जय किसान जय विज्ञान– भारतीय किसान इन की शीर्षतम प्राथमिकता रही है। गाँधीजी ने यहाँ तक कहा कि ''सादा, मेहनत–मसक्कत का, किसान का, जीवन ही सच्चा जीवन है।'' जय जवान, जय किसान, जय किसान उनकी प्राथमिकता रही।

4. खेती–बाड़ी को शीर्षतम प्राथमिकता– गाँधीजी ने 'उपवास' और 'बचत' का अद्भुत आचरण एवं नारा देकर देश के नागरिकों को 'आत्म सम्मान' के साथ जीना सिखाया तथा भारत द्वारा अन्न की कमी का गौरव के साथ सामना करना सिखाया गाँधीजी ने भारतीय कृषि के परिप्रेक्ष्य में कहा था कि ''कृषि भारत की अर्थ व्यवस्था का मुख्य आधार है और जिस धन्धें अर्थात खेती–बाड़ी पर तीन चौथाई लोगों की जीविका चलती हो, उसे हर दृष्टि से प्राथमिकता मिलनी ही चाहिए। भारत में कृषि की उपेक्षा–उपेक्षा आत्मघात के समान है।'' इनका का दृढ़ विश्वास था कि भारत एवं पूरी दुनिया का भविष्य कृषि में ही है,'' क्योंकि व्यक्ति खाएगा अन्न ही न कि हथियार। गाँधीजी का विचार था कि शीर्ष प्राथमिकता खाद्यान्न मूल्यों को बढ़ने से रोकना चाहिए तथा हरित क्रांति को सजीव खेती के माध्यम से साकार करना है और ऐसा करने में सफल भी रहे।'

5. आम इंसान से खास इंसान बनने में सफलता – गांधीजी हाड़ मॉस में एक आम इंसान ही थे और हमारी तरह ही विद्यार्थी जीवन एवं सामान्य जीवन था

लेकिन अपनी कमजोरियों को पहचाना, आत्ममंथन किया, उचित अनुचित का विवेक विकसित किया तथा आत्मबल का जीवन में शक्ति के रूप में प्रयोग किया। इनका व्यक्तित्व एवं कृतित्व हमेशा अनुकरणीय था, है और हमेशा रहेगा। उन्होंने साधारण से असाधारण इंसान बनने के लिए एक अनुकरणीय माडल प्रस्तुत किया।

6. जनप्रिय एवं जनांदोलन के प्रबुद्ध नेता–गाँधीजी 'जनान्दोलन' तथा जन के लोकप्रिय प्रबुद्ध नेता थे। उनके एक आवाज पर पूरा देश एकजुट होकर खड़ा हो जाता था। गाँधीजी के नमक सत्याग्रह, करो या मरो, एवं 'अंग्रेजो भारत छोड़ो' के नारे को सभी देशवासियों ने सहृदयता के साथ साकार किया और कहावत प्रचलित हुई कि ''चल पड़े जिधर दो डग, चल पड़े उधर कोटि पग।'' गाँधीजी 'आध्यात्मवादी एवं ईश्वर निष्ठ' थे। गाँधीजी ने कहा कि यह सृष्टि परमेश्वर की है और यह ईश्वर का घर है सो उसके नाम पर जितनी जरुरी है उसे लेकर बाकी सारी दुनियाँ को दे दे। और इसी को उन्होंने 'ट्रस्टीशिप का सिद्धान्त' कहा। गाँधीजी एवं शास्त्रीजी ने परमेश्वर की भक्ति का सरल सार 'जन एवं मानव सेवा' में ही सिखा दिया तथा यह भी सिखाया कि ''साधन की पवित्रता ही साध्य अर्थात लक्ष्य को निर्धारित करती है।'' उन्होंने जो ठान लिया उसे करके दिखाया। उनकी स्पष्ट मान्यता थी– ''मानव सेवाः माधव सेवा''।

गाँधीजी मजबूरी का नाम नहीं बल्कि मजबूती का नाम है। टाईम्स मैगजीन ने महात्मा गाँधी को सर्वकालीन महान नेता बताया तथा राजनेताओं में सर्वोपरि बताया। रवीन्द्र नाथ टैगोर ने उन्हें 'महात्मा' कहा। वे सार्वभौमिक व्यक्तित्व के स्वामी थे। उन के सिद्धान्त सभी के लिए और हमेशा के लिए शास्वत हैं तथा शास्वत रहेंगे।

अतः हमें चाहिए कि इन के जीवन का अनुसरण करें जो इसी मानव शरीर से महामानव बने और जो सभी प्राणियों में परमात्मा को देखते हुए उनके कल्याण एव सेवा में समर्पित रहें। यही गांधीजी के प्रति हमारी सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

गाँधीजी के जन्म दिवस पर सबसे बड़ा उपहार यह है कि संयुक्त राष्ट्रसंघ के द्वारा गाँधी जी के जन्म दिन अर्थात 2 अक्टूबर को विश्वस्तर पर ''अन्तर्राष्ट्रीय अहिंसा दिवस'' के रूप में प्रत्येक वर्ष मनाया जा रहा है जिससे स्वतः स्पष्ट है कि गाँधीजी के सिद्धान्तों का पूरी दुनियाँ में न सिर्फ मान्यता दी जा रही है, बल्कि उसका अनुपालन भी किया जा रहा है। यह हमारे लिए अत्यन्त गौरव का विषय है लेकिन यह गौरव तब और बढ़ जाएगा जब हम गाँधीजी के आदेर्शों एवं जीवन को अपने दैनिक दिनचर्या में शामिल करें।

अन्नं तु धान्यं भूतं धान्यं कृव्या बिना न च।

तस्मात्सर्व परित्यज्य कृषि यत्नेन कारयेत।।

अर्थात्

भोजन अन्न से बनता है, अन्न खेती बिना उत्पन्न नहीं होता, अतएव दूसरे काम छोड़कर, सबसे पहले खेती करनी चाहिए।।

हमारे देश एवं प्रदेश दोनों में, समय की माँग है कि हमें गॉधी जी के ''अधिकतम उत्पादन एवं उत्पादकता अधिकतम हाथों यानी 91% सीमान्त एवं लघु कृषकों के माध्यम से ही होना चाहिए''। टिकाऊ एवं जैविक पारिवारिक खेती के माध्यम से इन किसानों को प्रोत्साहन देना एवं उन्नयन करना सभी भारतवासियों का नियत एवं प्रथम पुनीत कर्तव्य है। यह किसान ही हमारा अन्नदाता और अराध्य है। राष्ट्र एवं प्रदेश हित में हमें छोटे एवं सीमान्त कृषकों को शीर्ष प्राथमिकता देनी ही होगी, कोई अन्य मार्ग है ही नहीं। हमें उ0प्र0 एवं भारत को ऐसे विकसित बनाना है जहाँ लखपतियों की संख्या से ज्यादा उस प्रदेश के हर नागरिक को मूलभूत सुविधा (अधिकार) ''रोटी– कपड़ा–मकान– शिक्षा–नोरंजन उपलब्ध हो।'' देश की कुल आवादी 124 करोड़ की कुल सम्पत्ति का लगभग आधा मात्र चंद लोगों के पास सिमट गयी है, जबकि 40 फीसद लोग कुपोषण से सोने को विवश है। 30 फीसद के पास मकान के नाम पर मात्र धरती बिछावन और आसमान ओढ़ने के लिए है।

भारतवर्ष को राजनैतिक आजादी (स्वशासन) वर्ष 1947 में 90 सालों के संघर्ष (1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम से शुरु होकर) के उपरान्त मिली थी, लेकिन 'गॉधी जी' के अनुसार आज यह राजनैतिक आजादी, आर्थिक, सामाजिक एवं नैतिक स्वतंत्रता के अभाव में आधी–अधूरी है। हमें 'पूर्ण स्वराज्य' एवं 'सुराज' चाहिए। पूर्ण स्वराज्य यानी राजनैतिक, आर्थिक, सामाजिक एवं नैतिक आजादी एक साथ, जिसे स्वामी सच्चिदानंद भारती 'आजादी की दूसरी लड़ाई कहते है।' स्वतन्त्रता प्राप्ति के 68 वर्षो बाद भी इस देश के लगभग 80 प्रतिशत लोगों को संतुलित आहार उपलब्ध नहीं है। लगभग 2 करोड़ बच्चे पोषणयुक्त अन्न के अभाव में भूख के कारण प्रतिदिन रोते हुए सो जाते हैं जबकि लगभग 65000 करोड़ रुपये का खाद्यान्न प्रतिवर्ष हमारे गोदामों में लापरवाही लालफीताशाही, भ्रष्टाचार एवं असम्वेदनशीलता के कारण सड़/अनुपयोगी हो जाता है। इस देश एवं प्रदेश में सम्यक कृषि विज्ञान की शिक्षा के अभाव एवं जांतिवाद के कारण विकास दर कम हुआ है तथा सामाजिक सौहार्द बिगड़ा है। इसके कारण भूमिहीन मजदूरों, सीमान्त एवं छोटे किसानों को आर्थिक–सामाजिक न्याय नहीं मिल रहा है। नैतिकता के अभाव में चारोतरफ भ्रष्टाचार का बोलबाला होने से प्रदेश एवं राष्ट्र की सम्यक् सर्वागीढ़ विकास बाधित हो रहा है।

चारों आजादियों यथा राजनैतिक, आर्थिक, सामाजिक एवं नैतिक आजादियों में राजनैतिक आजादी अर्थात स्वशासन तथा अपना संविधान, 'आर्थिक आजादी' माने भूख–मुक्त उ0प्र0 एवं भारत, सामाजिक आजादी यानी जॉतिवाद मुक्त एवं सौहार्दपूर्ण भारत एवं उ0प्र0 तथा नैतिक आजादी अर्थात भ्रष्टाचार मुक्त भारत एवं उत्तर प्रदेश। आर्थिक आजादी अर्थात भूख–मुक्त तथा स्वास्थ्य युक्त भारत एवं उ0प्र0 का निर्माण तब होगा जब हम टिकाऊ जैविक/सजीव/प्राकृतिक/पारिवारिक खेती के माध्यम से सभी प्रदेशवासियों एवं भारतीयों को संतुलित खाद्य सुरक्षा उपलब्ध करा सके। यद्यपि भारत सरकार ने सभी को खाद्य सुरक्षा का अधिकार प्रदान किया है जिसे साकार करने की आवश्यकता है। खाद्य सुरक्षा के लिए गाँधी जी के 'ट्रस्टीशिप सिद्धान्त' (Trusteeship Principle) अर्थात बड़े कृषक एवं कारपोरेटस, छोटे एवं सीमान्त किसानों की भलाई के बारे में सोचे एवं करें। उ0प्र0 की उर्वरा भूमि, किसानों एवं कृषि कर्मियों में इतनी क्षमता एवं पुरुषार्थ है कि के उन्नत कृषि के सौजन्य से समस्त भारतवासियों को ही नहीं बल्कि सम्पूर्ण विश्व को संतुलित आहार उपलब्ध कराकर देश एवं प्रदेश को आर्थिक स्वतंत्रता प्रदान कर सकते है। गॉधी जी के जीवन में क्रांतिकारी बदलाव दो किसान आंदोलनों के माध्यम से ही फलीभूत हुआ। पहला–चंपारन में नील आंदोलन तथा दूसरा खेड़ा में ऊँची लगान के विरूद्ध जनान्दोलन।

गॉधी जी के एकादश व्रत हैः– 1. सत्य 2. अहिंसा 3. व्रह्मचर्य 4. अस्वाद 5. अस्तेय 6. अपरिग्रह 7. अभय 8. अस्पृश्यता निवारण 9. शरीर श्रम 10. सर्व धर्म समभाव और 11. स्वदेश।

गॉधी जी के रचनात्मक कार्यक्रम हैः– 1. कौमी एकता 2. मद्यनिषेध 3. अस्पृश्यता निवारण 4. खादी 5. ग्रामोद्योग 6. गॉवों की सफाई 7. बुनियादी तालीम 8. प्रौढ़ शिक्षा 9. स्त्रियों का सम्मान 10. आरोग्य के नियमों (प्राकृतिक चिकित्सा) 11. प्रांतीय भाषाओं को बढ़ावा 12. हिन्दी राष्ट्रभाषा 13. आर्थिक समानता 1.4 मजदूर 15. आदिवासी 16. कुष्ठरोगी 17. विद्यार्थी 18. गोसेवा (ब्रह्मस्वरूप–गोसेवा) और 19. किसान।

गांधीजी का धैर्य पृथ्वी जैसा, जल जैसी शीतलता, अग्नि जैसा तेज, वायु जैसा वेग तथा आकाश जैसी विशालता थी। व्यक्तिगत जीवन में उन्होंने सत्याग्रह किया तथा सर्वोदय की बात करते रहें।

सत्यनिष्ठा, स्वाध्याय, विवेक, आत्मबल, उनकी शक्तियाँ थी। उनका आर्थिक आदर्श–स्वराज्य एवं सुराज, सामाजिक आदर्श–सर्वोदय, जीवन का आदर्श – सत्याग्रह, देशभक्ति का आदर्श –स्वदेशी, धार्मिक आदर्श–सर्व धर्म समाादर, शासन का आदर्श– रामराज्य तथा आध्यात्मिक आदर्श– अहिंसा था, जिसका उन्होंने जीवनपर्यन्त पालन किया।

नील की अमानवीय खेती के विरूद्ध गॉधी जी का प्रथम सफल कृषक जनांदोलन

चम्पारन राजा जनक की भूमि है। चम्पारन में जैसे आम के वन हैं, वैसे वहां सन् 1917 में नील के खेत थे। चम्पारन के किसान अपनी ही जमीन के 3/20 हिस्से में नील की खेती उसके असल मालिक के लिए करने के कानून से बंधे थे। इस प्रथा को 'तीन कठिया' कहते थे। बीस कट्ठे का वहां एक एकड़ था और उसमें तीन कट्ठे की बोआई का नाम था 'तीन कठिया' की प्रथा।'

गांधीजी 16 अप्रैल 1917 को मोतिहारी पहुँचे जहाँ चंपारण जिला का प्रशासनिक मुख्यालय था। वहाँ जो उन्होंने देखा और सुना उससे वे काँप गये। प्राकृतिक नील अन्तर्राष्ट्रीय बाजार में कभी बहुत पैसा दिला सकता था। लेकिन रासायनिक रंगों के आने के बाद प्राकृतिक नील के दाम में भारी गिरावट आयी और नील खेती के मालिक अपने नुकसान की भरपाई किसानों को निचोड़कर कर लेते थे।

नील बागानों के मालिकों को आभास हो गया कि गांधीजी उनकी शोषणमूलक गतिविधियों का खुलासा कर देंगे, इसलिए जिला प्रशासन पर दबाव डालकर उन्हें जिले से बाहर कराने का आदेश निकलवाया। गांधीजी ने बाहर जाने से मना कर दिया। उन्हें मंजिस्ट्रेट के सामने पेश होने के लिए सम्मन भेजा गया। गाँधीजी 18 अप्रैल को अदालत में पेश हुए और एक बयान दिया। उस बयान की भाषा की शैली और शक्ति ने उस बयान के शब्दों को अमर बना दिया है। गांधीजी छोड़ दिये गये। आगे दस महीने चंपारण में ही वे रहे। उन्होंने वहाँ की स्थिति को बारीकी से जाँचा और गरीब किसानों पर होनेवाले अमानवीय शोषण की एक विस्तृत रिपोर्ट राज्यपाल को दी। राज्यपाल ने एक सरकारी जाँच समिति बिठाई और उसकी रिपोर्ट के आधार पर नील बागानों के मालिकों की अवैध गतिविधियाँ खत्म की गयी।

गांधीजी की सहानुभूति भारत के छोटे–छोटे किसान, मजदूर, कारीगर आदि गरीबों के साथ सबसे ज्यादा थी। इन लोगों के पूर्वज किसी समय गौरवपूर्ण एवं सम्पन्न जीवन बिताते थें। लेकिन ब्रिटिश राज ने उनके खेतों का अपहरण कर, उनपर भारी लगान लगाकर, उनके खाने के नमक पर तक कर लगाकर और उनके हस्तकारी के उत्पादनों के बदले फैक्टरी के सस्ते माल बाजार में लाकर उन्हें गरीब बना दिया। सन् 1921 में गांधीजी ने तमिलनाडु के गरीब गाँववालों को घुटनों तक की धोती पहने और ऊपर एक कपड़ा ओढ़ें देखा तो उन्होंने निर्णय लिया कि वे भी उसी तरह कपड़े पहनेंगे। 22 सितम्बर 1921 को मदुरै में उन्होंने अपनी काठियावाड़ी धोती, कुर्ता और पगड़ी को त्याग दिया और घुटनों तक की धोती और ऊपर एक कपड़े वाली पोशाक में रहना प्रांरम्भ किया।

गॉधी जी का खेड़ा में किसान सत्याग्रह

गांधीजी के अनुसार गरीब भारतीय किसानों पर भारी लगान बरतानिया सरकार का सबसे बड़े अत्याचारों में एक था। बहुत ऊँचें दर का यह लगान गरीब किसानों की शक्ति के बाहर था। सन् 1927–28 में गुजरात के खेड़ा जिले में अकाल पड़ा और जमीन ने उस वर्ष लगान माफ करने की अपील सरकार से की, लेकिन अधिकारियों के कानों में जूँ तक नहीं रेंगी।

राजस्व बढ़ाने के लिए समय–समय पर यह लगान बढ़ाया जाता रहा। 1928 में बंबई प्रांत की सरकार ने गुजरात के बरडोली जिले में लगान में 22 वृद्धि का आदेश निकाला। गांधीजी ने देखा की यह वृद्धि अन्यापूर्ण है और सरदार वल्लभ भाई पटेल को अतिरिक्त लगान के विरुद्ध बरडोली क किसानों के

सत्याग्रह आंदोलन का नेतृत्व करने के लिए कहा। जिला प्रंशासन ने इसकी प्रतिक्रिया में किसानों की मवेशी क्या, भांडे –बरतन तक जब्त करना शुरू कर दिया। लेकिन सत्याग्रही आडिग थें। अन्त में सरकार को लगान में वृद्धि का निर्णय वापस लना पड़ा और जब्त की गयी वस्तुओं को लौटाना पड़ा। किसानों ने पुराने दर पर ही लगान अदा किया। स्थानीय होने के बावजूद बरडोली सत्याग्रह ने पूरे भारत को आकर्षित किया। उसकी सफलता पूरे भारत में गूँज उठी और एक देश–व्यापी आंदोलन को छेड़ दिया। गांधीजी अन्यायपूर्ण नमक कर के अत्याचारों पर हमेशा ही बोलते आये थे। उन्होंने नमक सत्याग्रह प्रारंभ किया। उसने भारतीय स्वाधीनता आंदोलन

की ओर पूरे संसार को आकर्षित किया। पूरी बरतानिया सरकार हिल गयी।

गांधीजी की सलाह पर किसान लगान न देकर सत्याग्रह करने लगे। अधिकारियों ने खेत जब्त करना, मवेशी जब्त करना आदि बल प्रयोग शुरु किये। लेकिन सत्याग्रह लगातार चलता रहा उसमें थोड़ी बहुत सफलता भी मिली। सरकार ने अत्यंत गरीब किसानों का लगान माफ करने के लिए मान लिया। लगभग इसी समय गांधीजी ने चर्खा का पता लगाया और उससे खादी उत्पन्न करवाने का निश्चय किया। लोगों की मांग इतनी साफ और साधारण थी कि उसके लिए कोई लड़ाई लड़ने की जरूरत ही नहीं होनी चाहिए। ऐसा कानून था कि यदि फसल चार ही आना या इससे कम हो, तो उस वर्ष का लगान माफ हो जाना चाहिए, परन्तु सरकारी अधिकारियों का अन्दाज चार आने से अधिक था। लोगों द्वारा यह सिद्ध किया जा रहा था कि उपज चार आने से कम होनी चाहिए, पर सरकार क्यों मानने लगी? लोगों की ओर से पंच चुने जाने की मांग हुई। सरकार को वह असह्य लगी। जितनी विनय–प्रार्थना हो सकती थी, उतनी कर लेने और साथियों से विचार–विमर्श कर लेने के बाद गांधीजी ने लोगों को सत्याग्रह करने की सलाह दी। और अन्त में नीचे लिखे आशय की प्रतिज्ञा पर हस्ताक्षर लिये गये।

''हम जानते हैं कि हमारे गांव की फसल चार आने से कम हुई है, इस कारण हमने लगान की वसूली अगले साल तक मुल्तवी रखने के लिए प्रार्थना की, फिर भी वह नहीं रोकी गयी। इसलिए हम नीचे सही करने वाले प्रतिज्ञा करते हैं कि हम सरकार का लगान, इस साल का पूरा या जो शेष रह गया है, अदा नहीं करेंगे, पर उसे वसूल करने में सरकार जो कानूनी कार्यवाही करना चाहेगी, वह करने देंगे और उनसे होने वाले कष्ट सहन (सहनयोग) करेंगे। हमारी जमीन जब्त की जायेगी, तो हम वह भी हो जाने देंगे, पर अपने हाथ से लगान देकर झूठ बनकर आत्मसम्मान नहीं खोएंगे। यदि सरकार दूसरी किश्त की वसूली बाकी के सब स्थानों पर मुल्तवी कर दे, तो हममें से जिनमें लगान अदा करने की सामर्थ्य है, उनके लगान अदा न करने का कारण यह है कि यदि समर्थ अदा कर दें, तो असमर्थ घबराहट में अपनी चाहे जिस चीज को बेचकर या ऋण लेकर अदा करेंगे और दुःख भोगेंगे। हम मानते हैं कि ऐसी स्थिति में गरीबों का बचाव करना शक्तिशाली का कर्तव्य है।''

खेड़ा की लड़ाई से गुजरात के किसानों की जागृति का, उनकी राजनैतिक शिक्षा का श्रीगणेश हुआ। विदुषी डॉ. बेसेंट के होमरूल के तेजस्वी आंदोलन ने उसका स्पर्श अवश्य किया था, लेकिन कृषक–जीवन में स्वयंसेवकों का सच्चा प्रवेश तो कह सकते हैं कि इस लड़ाई से हुआ। स्वयंसेवक पाटीदारों के जीवन ओतप्रोत हो गये थे। स्वयं सेवकों को अपने क्षेत्र की मर्यादा इस लड़ाई में प्राप्त हुई, उनकी त्याग–शक्ति की वृद्धि हुई। वल्लभभाई पटेल ने अपने आपको इस लड़ाई में पहचाना। यह एक ही कोई ऐसा–वैसा परिणाम नहीं है, यह हम गत वर्ष संकट निवारण के समय और इस वर्ष बार डोली में देख सके हैं। गुजरात के जनजीवन में नवीन तेज आ गया है। नया उत्साह उत्पन्न हुआ है। पाटीदारों को अपनी शक्ति को जो ज्ञान हुआ, वह कभी नहीं भूला। सब समझ गये कि प्रजा की मुक्ति स्वयं उसी पर, उसकी त्याग–शक्ति पर आधारित है। 'सत्याग्रह' ने खेड़ा के द्वारा गुजरात में जड़ जमा ली। खेड़ा की जनता को प्रसन्नता थी, क्योंकि उसने देख लिया था कि उसकी शक्ति के मान से उसे सब कुछ मिल गया और आगे के लिए राज्य की ओर से मिलने वाले कष्टों से निवारण का मार्ग उसके हाथ में लग गया। इतना ज्ञान उसके उत्साह के लिए बहुत था।

किसान के बारे में गाँधीजी का विचार

''किसान काश्तकार का स्थान पहला है, चाहे वह भूमिहीन मजदूर हो, चाहे मेहनत–मजदूरी करनेवाला भूस्वामी हो। खेती किसान पर ही निर्भर है, इसलिए न्याय की दृष्टि से जमीन का मालिक वहीं है या होना चाहिये, न कि गैर–हाजिर जमींदार। परन्तु अहिंसक प्रणाली में मजदूर को गैर–हाजिर जमींदार जबरन् बेदखल नहीं कर सकता। उसे इस तरह काम करना चाहिये कि जमींदार के लिए उसका शोषण करना नामुकिन हो जाय। किसानों में घनिष्ठ सहयोग निहायत जरूरी है। इसके लिए जहां न

हों वहां संगठन करने वाली संस्थाएं या समितियां बनाई जायं और जो पहले से मौजूद हैं, उन्हें जहां जरूरत हो वहां सुधारा जायं। किसान ज्यादातर निरक्षर हैं। परन्तु प्रौढ़ों और पाठशाला जाने की उम्र वाले नौजवान लोगों का शिक्षा दी जानी चाहिये। यह बात स्त्री–पुरुष दोनों पर लागू होती है। जब वे भूमिहीन मजदूर हो तो उनकी मजदूरी को ऐसे सतर पर ले जाना चाहिये, जिससे उनके लिए अच्छा जीवन निश्चित हो जाय। इसका अर्थ यह है कि उन्हें संतुलित भोजन, रहने के लिए मकान।''

''स्वराज्य की इमारत एक जबरदस्त चीज है, जिसे बनाने में अस्सी करोड़ हाथों का काम है। इन बनाने वालों में किसानों की तादाद सबसे बड़ी है। सच तो यह है कि स्वराज्य की इमारत बनाने वालों में ज्यादातर (करीब 80 फीसदी) किसान ही हैं। इसलिए किसान ही कांग्रेस है ऐसी हालत पैदा होनी चाहिए।''

गाँधी जी ने अपने स्वराज्य, स्वदेशी, सर्व धर्म समादर, रामराज्य, सत्या अहिंसा के सिद्धान्त तथा किसान एवंज न आदोलन के बल पर भारत को सन 1947 में स्वंतंत्र कराया तथा भारत को अर्थिक, सामाजिक तथा नैतिक रूप से शक्तिशाली राष्ट्र बनाने में अपनी महती भूमिका निभायी। उनको शत नमन।

– महात्मा गॉधी।

सन्दर्भः

- ❖ कृषि सेवा सन्देश।
- ❖ सेकेन्ड फीडम स्ट्रागल (Second Freedom Sturggle)
- ❖ दैनिक जगारण
- ❖ कृषि विभाग का कार्यकृति दिवदर्षक
- ❖ गाँधी टैगोर नेहरू
- ❖ गाँधी के विचार
- ❖ योजना
- ❖ कुरुक्षेत्र